चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

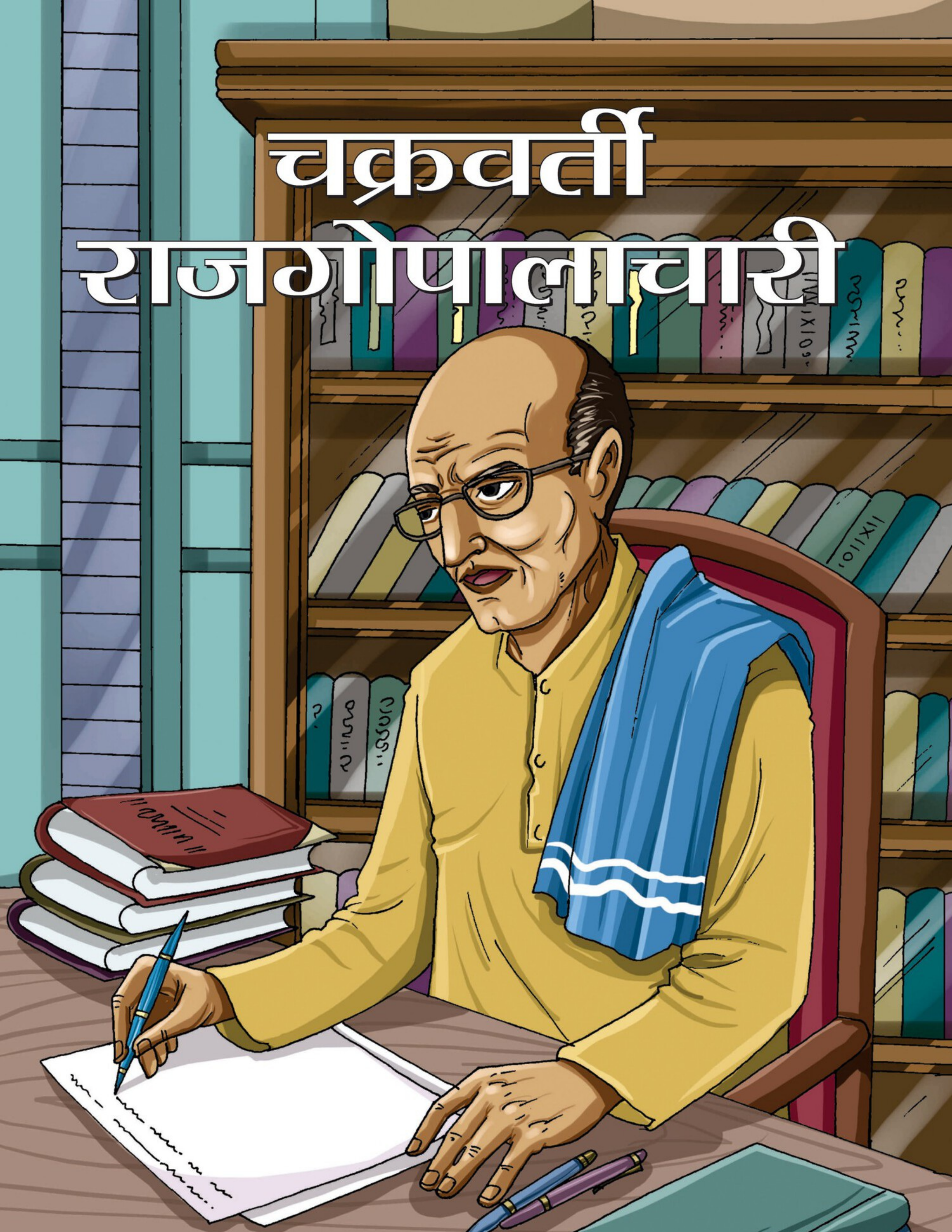

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

प्रभात प्रकाशन
ISO 9001:2015 प्रकाशक

एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवार में पैदा हुए राजाजी एक तीव्र बुद्धिवाले बालक थे। उन्होंने गाँव होसूर में अपनी मूल शिक्षा प्राप्त की और फिर सेंट्रल कॉलेज, बेंगलुरू से एफ.ए. परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद उन्होंने अपना बी.ए. का अध्ययन पूरा किया और फिर 1900 में प्रेसीडेंसी कॉलेज, मद्रास से एल.एल.बी. की पढ़ाई की।

विषय-सूची

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी (10 दिसंबर, 1878-25 दिसंबर, 1972)

- प्रारंभिक जीवन और शिक्षा
- स्वतंत्रता आंदोलन का प्रभाव
- कांग्रेस के पाँच शीर्ष नेताओं में से एक
- सादा जीवन, उच्च विचार
- मद्रास प्रांत के मुख्यमंत्री
- भारत के विभाजन के समर्थक
- अंतरिम सरकार में
- भारत रत्न से सम्मानित
- एक अलग राजनीतिक पार्टी बनाना
- साहित्यिक व्यक्तित्व
- स्वामी विवेकानंद के साथ बैठक
- महत्त्वपूर्ण स्थान

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

(10 दिसंबर, 1878-25 दिसंबर, 1972)

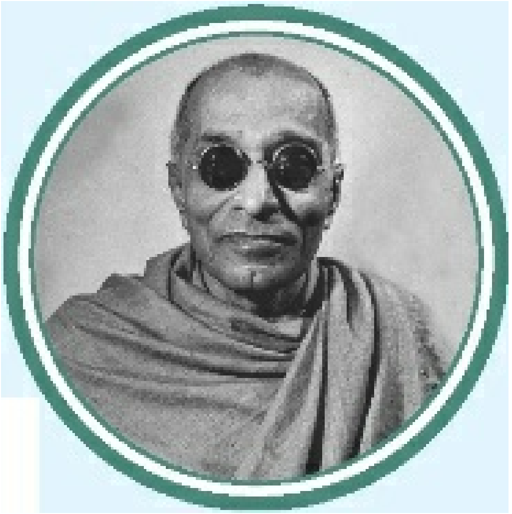

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी एक महान् वकील, कुशल नौकरशाह, जाने-माने राजनायिक और एक स्थापित राजनीतिक नेता थे। वह स्वतंत्र भारत के पूर्व और एकमात्र गवर्नर जनरल थे। उन्हें 'राजाजी के साथ -साथ आधुनिक युग का चाणक्य' भी कहा जाता था। स्वतंत्र भारत का इतिहास बनाने में राजाजी सम्मानित स्थान पर हैं।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

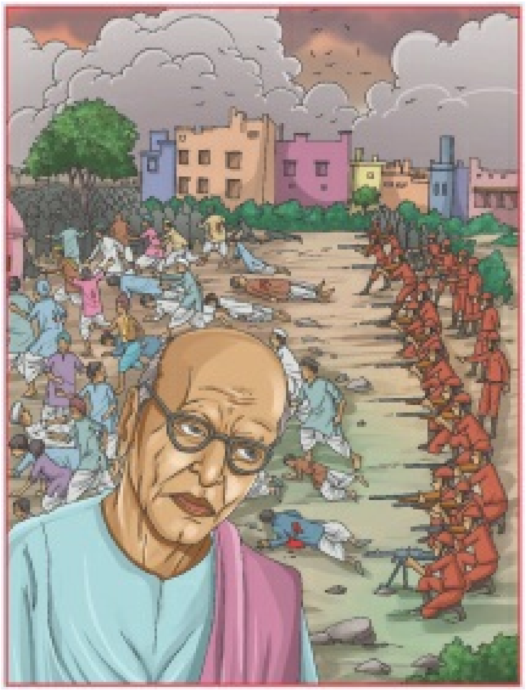

राजगोपालाचारी का जन्म 18 दिसंबर, 1878 को मद्रास के तत्कालीन प्रांत (अब तमिलनाडु) के सेलम जिले में धोरपल्ली गाँव में हुआ था। उनके पिता श्री नलिन चक्रवर्ती सेलम में एक न्यायाधीश थे।

एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवार में पैदा हुए राजाजी एक तीव्र बुद्धिवाले बालक थे। उन्होंने गाँव होसूर में अपनी मूल शिक्षा प्राप्त की और फिर सेंट्रल कॉलेज, बेंगलुरू से एफ.ए. परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद उन्होंने अपना बी.ए. का अध्ययन पूरा किया और फिर 1900 में प्रेसीडेंसी कॉलेज, मद्रास से एल.एल.बी. की पढ़ाई की। कानून में स्नातक होने के बाद राजगोपालाचारी ने सेलम में कानूनी अभ्यास शुरू किया। जल्द ही वह अपनी शिक्षा, अंतर्दृष्टि और प्रतिभा के कारण कानूनी क्षेत्र में एक जानी-मानी हस्ती हो गए और उन्हें गुणी व विज्ञ वकीलों के बीच गिना जाने लगा था।

स्वतंत्रता आंदोलन का प्रभाव

अपने कानूनी अभ्यास के दौरान, राजाजी मौजूदा राजनीतिक परिस्थितियों से स्वाभाविक रूप से प्रभावित थे। अदालतों में अंग्रेजी न्यायाधीशों के प्रभुत्व को देखते हुए, आम भारतीय नागरिकों के खिलाफ पक्षपातपूर्ण व्यवहार और अंग्रेजों द्वारा समाज पर अत्याचार को बढ़ते देख, उन्होंने खुद को स्वतंत्रता आंदोलन की लहर में उलझा पाया। जब 13 अप्रैल, 1919 में पंजाब में जलियाँवाला बाग नरसंहार हुआ तो राजाजी मद्रास में सत्याग्रह आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए आगे आए और गिरफ्तारी दी।

स्वतंत्रता आंदोलन में राजाजी गांधीजी के सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों से काफी प्रभावित थे। गांधीजी भी उनकी प्रखर बुद्धि के एक महान् प्रशंसक थे। जब गांधीजी ने 1920 में 'असहयोग आंदोलन शुरू किया और अंग्रेजी सरकार ने उन्हें गिरफ्तार किया तो राजाजी ने उनकी अनुपस्थिति में गांधीजी द्वारा संचालित अखबार 'यंग इंडिया' के संपादकीय पद की जिम्मेदारी सँभाली। उन्होंने कुछ समय बाद अपना कानूनी अभ्यास छोड़ दिया और

गांधीजी के एक प्रतिनिधि के रूप में स्वतंत्रता आंदोलन में खुद को व्यस्त कर लिया ! गांधीजी और राजाजी के बीच संबंधों को देखते हुए, लोगों ने राजाजी को गांधीजी के शिष्य' के रूप में वर्णित किया।

कांग्रेस के पाँच शीर्ष नेताओं में से एक

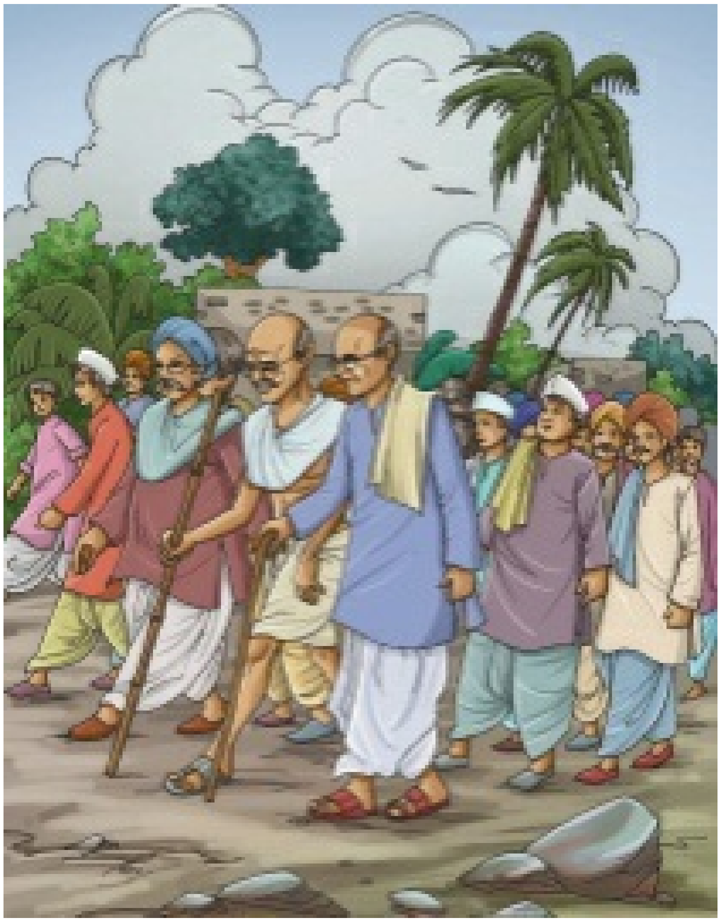

राजाजी को अपने समय के पाँच शीर्ष कांग्रेस नेताओं में से एक माना जाता था। शेष जवाहरलाल नेहरू, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, सरदार वल्लभभाई पटेल और मौलाना आजाद थे। गांधीजी के अलावा राजाजी भी एक अमेरिकी लेखक थरो से बहुत प्रभावित थे। वह क्रांतिकारी महिलाओं की राष्ट्रीय विचारधारा से भी प्रभावित थे, जैसे एनी बेसेंट और सरोजिनी नायडू।

राजाजी मानसिक रूप से प्रखर थे। उनके पास एक निर्भीक वाषी वाली जिह्वा भी थी। वह दृढ़प्रतिज्ञ एवं बहुत सूक्ष्मता से परखने वाले थे। वह अंग्रेजी और तमिल, दोनों भाषाएँ धाराप्रवाह बोल सकते थे।

सादा जीवन, उच्च विचार

अपने दैनिक जीवन में वह धोती, कुरता और चप्पल पहनते थे और साथ में काला चश्मा लगाते थे—उनकी पोशाक इतनी साधारण थी कि यह उनकी पहचान बन गई। जो लोग उन्हें उनके नाम से नहीं जानते थे, वे कपड़ों से

पहचान लेते थे।

राजगोपालाचारी 1921 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सचिव बने और 1922 में कार्यकारी समिति के सदस्य बने। समय के साथ वह 1942 तक सदस्य बने रहे, और 1946-47 के दौरान भी। वह 1921 और 1942 के बीच पाँच बार जेल गए।

1927 में गांधीजी के गोद लिये बेटे देवदास, राजाजी की बेटी लक्ष्मी से शादी करना चाहते थे; हालाँकि जाति मतभेदों के कारण-गांधीजी वैश्य और राजाजी एक ब्राह्मण थे—यह विवाह कोई आसान काम नहीं था। इसलिए गांधीजी और राजाजी ने संयुक्त रूप से लक्ष्मी और देवदास के सामने एक शर्त रखी कि उन्हें खुद को पाँच साल तक अलग रखना होगा और यदि वे तब भी चाहेंगे, तो वे शादी कर सकते थे। उन दोनों ने इस दायित्व को पूरी तरह निभाया और 1933 में दोनों का धूमधाम से विवाह हुआ।

मद्रास प्रांत के मुख्यमंत्री

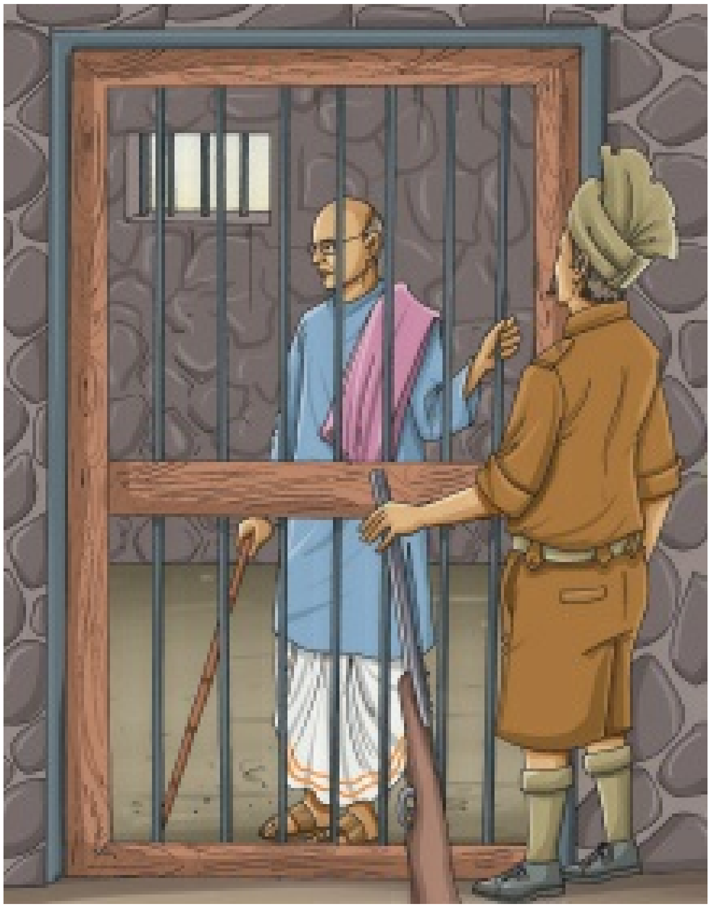

1936 में आम चुनावों के बाद कांग्रेस ने मद्रास में प्रांतीय सरकार बनाई और 1937 में राजाजी को उसका मुख्यमंत्री नियुक्त किया गया। वह बहुत कुशलता से प्रशासन चलाते थे। इस दौरान उन्होंने दक्षिण में हिंदी के प्रसार के लिए काम शुरू किया। इस प्रयास को कुछ कट्टरपंथियों के हाथों प्रतिद्वंद्विता का सामना करना पड़ा।

द्वितीय विश्वयुद्ध 1939 में शुरू हुआ और कांग्रेस के ब्रिटिश सरकार के साथ कुछ मतभेद थे। नतीजतन, नवंबर 1939 में राजाजी ने अन्य कांग्रेस मंत्रियों के साथ मंत्रियों के परिषद् से इस्तीफा दे दिया।

जुलाई 1940 में कांग्रेस ने पूना में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सत्र का आयोजन किया। उन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध में ब्रिटिश सरकार के साथ राजनीतिक सहयोग की पूर्व शर्त के रूप में अंतरिम केंद्र सरकार के संविधान की मंजूरी के लिए माँग की थी। सरकार इस प्रस्ताव से जुड़ गई। हालाँकि दूसरी ओर राजाजी और अन्य कांग्रेस नेता स्वतंत्रता आंदोलन को गति दे रहे थे; इसलिए 4 दिसंबर, 1940 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और एक साल की जेल की सजा सुनाई।

भारत के विभाजन के समर्थक

राजाजी कांग्रेस में एकमात्र नेता थे, जिन्होंने विरोध करने के स्थान पर भारत के विभाजन के लिए मुसलमान-संघ की माँग का समर्थन किया था। उन्होंने कहा कि एक बार मुसलमानों ने विभाजन करने का फैसला किया था, तो अंततः यह जल्दी या बाद में, विभाजन का कारण बनना ही था। वह सही भी थे। इसके विपरीत, महात्मा गांधी के सभी प्रयासों के बावजूद भारत का विभाजन होकर रहा।

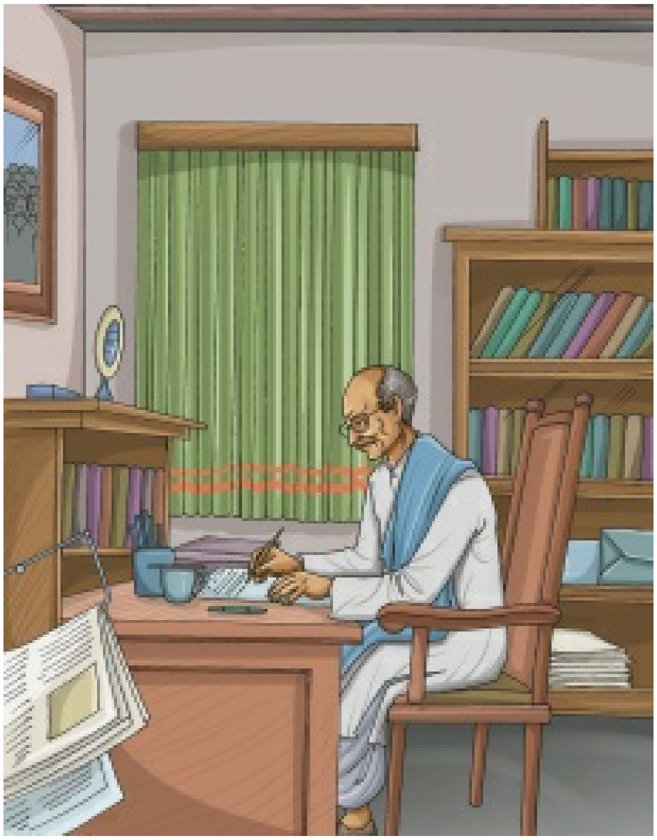

1941-46 की अवधि के दौरान राजाजी को कई अवसरों पर तीखी आलोचना का सामना करना पड़ा था। उन्होंने उन कांग्रेस नेताओं का दृढ़ विरोध किया, जिन्होंने विधानसभा चुनावों को बेकार माना। गांधीजी ने भी इस विचार का समर्थन किया। कांग्रेस में राय के बढ़ते मतभेदों के चलते वे मर्माहत हुए। कांग्रेस के वर्धा सत्र के बाद राजाजी ने

आनंद भवन में आयोजित। कांग्रेस कार्यकारिणी समिति की बैठक में हिस्सा लिया। वह मुसलमान संघ और ब्रिटिश सरकार की ओर अन्य समिति के सदस्यों द्वारा अपनाई गई नीति के साथ असहमति में थे। दूसरा, उन्होंने हिंदू-मुसलिम विभाजन की समस्या पर कुछ टिप्पणी की, और देश के विभाजन को पर्याप्त समाधान के रूप में प्रस्तुत किया।

कांग्रेस नेताओं ने इसके लिए उनकी गंभीर आलोचना की। हिंदू महासभा ने उन्हें काले झंडे दिखाते हुए विरोध किया। इसलिए उन्होंने कांग्रेस कार्यकारिणी की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया; लेकिन वह अपनी नीतियों से अविश्वसनीय बने रहे। उनमें एक महान् गुणवत्ता उन नीतियों पर दृढ़ रहना था, जिन्हें उन्होंने उचित माना और कभी भी संवेदना के डर से अपने मार्ग से विचलित नहीं हुए।

कार्यकारिणी से इस्तीफा देने के बाद भी राजाजी गांधीजी और स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े रहे। सितंबर 1944 में गांधीजी-जिन्ना वार्ता के दौरान उन्होंने गांधीजी के लिए राजनीतिक सहायक की भूमिका निभाई।

जुलाई 1946 में उन्हें एक बार फिर कांग्रेस कार्यकारिणी समिति के सदस्य के रूप में लिया गया। इस वर्ष उन्हें राज्यपाल परिषद्का सदस्य भी नियुक्त किया गया था।

अंतरिम सरकार में

आजादी से पहले जब अंतरिम केंद्र सरकार का गठन देश में हुआ था, राजाजी को उद्योग मंत्री नियुक्त किया गया था। इस समय उन्होंने उद्योग के साथ ही साथ आपूर्ति, शिक्षा और वित्त विभागों का प्रभार भी सँभाला।

15 अगस्त, 1947 को आजादी के बाद राजाजी को पश्चिम बंगाल राज्य का राज्यपाल नियुक्त किया गया था। उन दिनों यह राज्य अकाल और सांप्रदायिक विभाजन के एक बड़े संकट से गुजर रहा था, और उसे एक कुशल प्रशासक और बौद्धिक राजनेता की आवश्यकता थी।

स्वतंत्र भारत के पहले और अंतिम गवर्नर जनरल

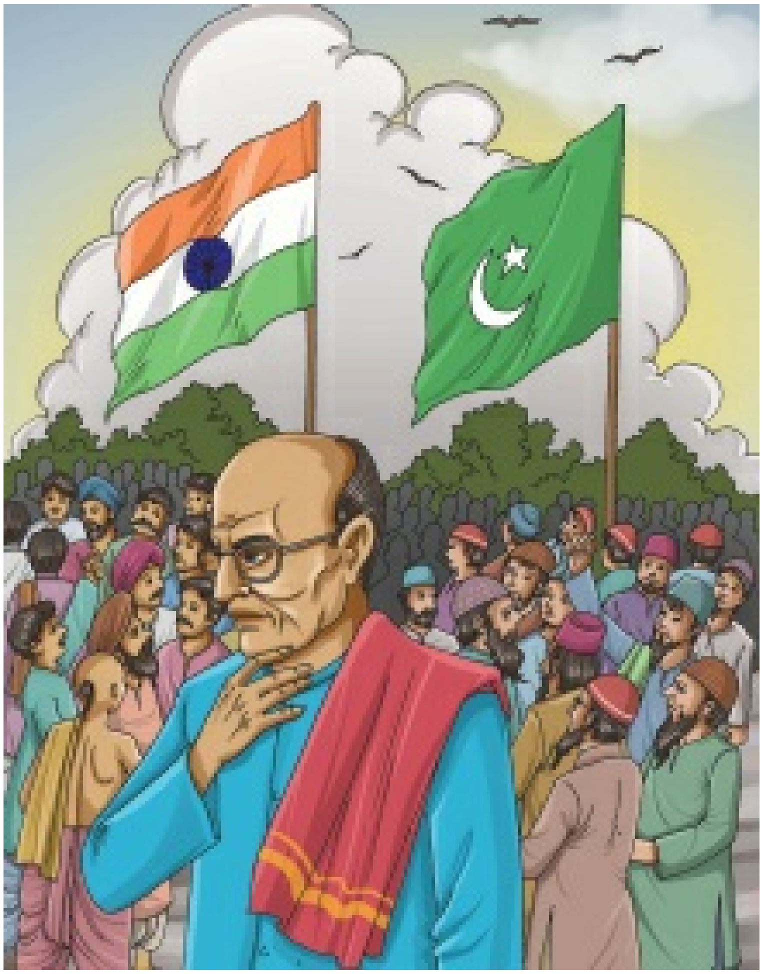

राजाजी ने राज्यपाल पद केवल 20 जून, 1948 तक सँभाला। इस बीच तत्कालीन वाइसरॉय लॉर्ड माउंटबेटन नवंबर 1947 में लंबी अवधि के लिए इंग्लैंड रवाना हुए। इस अवधि के दौरान राजाजी ने स्थानापन्न राजप्रतिनिधि के रूप में पदभार सँभाला। इसलिए जब 21 जून, 1948 को लॉर्ड माउंटबेटन को चार्ज से मुक्त कर दिया गया, तब राजाजी को नए गवर्नर जनरल बनाया गया।

उन्होंने 26 जनवरी, 1950 तक इस पद पर आसीन रहे, जब भारत का नया संविधान लागू हुआ। उन्होंने कुशलतापूर्वक इस क्षमता में अपने कर्तव्यों का पालन किया। वह मुक्त भारत के पहले और अंतिम गवर्नर जनरल थे।

इतने उच्च पद को प्राप्त करना किसी भी राजनेता के लिए सम्मान का विषय था। यह समकालीन भारत में सबसे ज्यादा उच्च पद था। मई 1950 में संविधान लागू होने पर वह इस पद से हट गए, लेकिन वह राजनीतिक जीवन से नहीं निकले। जब जवाहरलाल नेहरू ने मई 1950 में अपना केंद्रीय मंत्रिमंडल गठित किया, तब राजाजी को इसमें एक जगह मिली, लेकिन उन्हें कोई भी विभाग नहीं सौंपा गया और दिसंबर 1950 तक किसी भी विभाग को पाए बिना वह मंत्री बने रहे।

भारत रत्न से सम्मानित

सन् 1952 में हुए आम चुनावों के बाद राजाजी को एक बार फिर मद्रास राज्य का मुख्यमंत्री नियुक्त किया गया था। उन्होंने वहाँ स्थिति में सुधार किया। उन्होंने रचनात्मक रूप से दक्षिण में हिंदी भाषा के प्रसार के लिए योगदान दिया। स्थानीय जनता ने उनके प्रयासों का विरोध किया। उन्होंने 1954 में मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। देश में उनकी निस्स्वार्थ सेवा को देखते हुए उन्हें 1954 में भारत रत्न के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

एक अलग राजनीतिक पार्टी बनाना

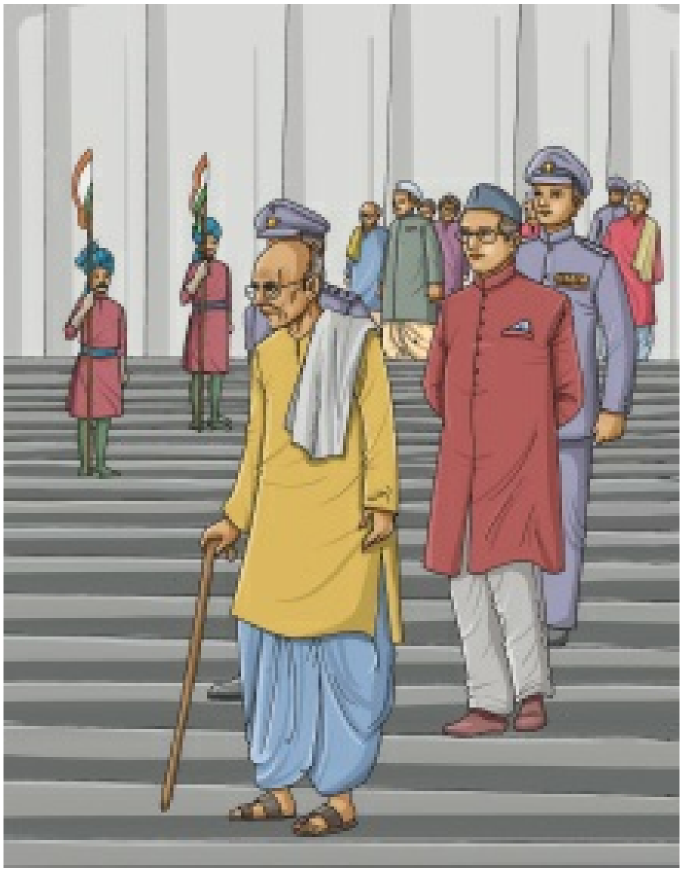

कांग्रेस नीतियों के मतभेदों के कारण राजाजी ने जून 1954 में मद्रास में स्वतंत्र पार्टी नामक एक अलग राजनीतिक दल गठित किया। उनकी कार्य शैली के कारण इस पार्टी को जल्दी ही संसद् में दूसरी सबसे प्रभावशाली राजनीतिक पार्टी माना जाने लगा।राजाजी ने नेहरू के आरक्षित-परमिट राज' दाँत और नाखून' का विरोध किया, लेकिन उनके विपक्ष में कोई नहीं था; लेकिन आज हम सार्वजनिक जीवन के सभी क्षेत्रों में मौजूदा भ्रष्टाचार के रूप में इसके परिणाम देख सकते हैं।

राजाजी एक आदर्श भारत बनाने की कामना करते थे। एक कुशल राजनेता होने के अलावा, उनके पास एक उद्योगपति की दूरदर्शिता भी थी। उन्होंने सार्वजनिक और निजी हितों में उच्च उत्पादकता प्राप्त करनेवाले लोगों को माध्यमिक लाभ देने का पक्ष लिया। वह एक ऐसा भारत बनाना चाहते थे, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति के कौशल को एक जगह मिल जाए और भारत और विदेशों में खुले बाजार में उसके प्रयासों को एक उपयुक्त दिशा मिल सके। उन्होंने

प्रत्येक व्यक्ति के कौशल और प्रवीणता को खोजने के लिए निजी एकाधिकार का समर्थन किया और इसके लिए उन्होंने आरक्षित-परमिट राज के उन्मूलन पर जोर दिया। वह प्रत्येक नागरिक के व्यक्तित्व पर धर्म और आदर्शवाद के प्रभाव को देखना चाहते थे।

उनकी उच्च सोच और अथक प्रयासों ने सन् 1950 में नौकरशाही के झुकाव से अर्थव्यवस्था को मुक्त करने का नेतृत्व किया और भारतीय अर्थव्यवस्था को मानकीकृत किया गया, जिसके परिणामस्वरूप लोगों को राजाजी और उनकी 'स्वतंत्र पार्टी का फिर से मूल्यांकन करने के लिए मजबूर किया गया।

साहित्यिक व्यक्तित्व

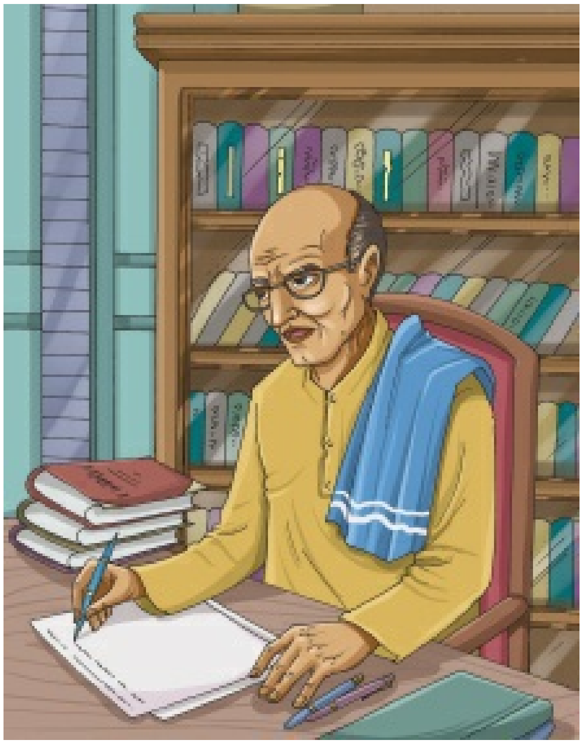

राजनीतिक गतिविधियों के अलावा, राजाजी की लेखन में रुचि थी। उन्होंने अपने व्यस्त कार्यक्रम से लेखन के लिए समय निकाला। वह एक कुशल अनुवादक और लेखक थे, और कई भाषाओं में अच्छा आदेश था। उन्होंने करल', 'ओबियस', 'रामायण', 'भज गोविंदम', ' भगवद्गीता', 'महाभारत' और कई अन्य कृतियों और तमिल में उपनिषदों पर लघुकथाएँ लिखीं। उन्होंने अंग्रेजी में 'महाभारत' और 'रामायण' का अनुवाद भी किया। इसके अलावा, उन्होंने 'भगवद्गीता', 'उपनिषद् एंड हिंदुइज्म', 'डॉक्ट्रिन एंड वे ऑफ लाइफ़' और अन्य पुस्तकें लिखीं। इसके अलावा उन्होंने 'प्रोहिबिशन मैनुअल' और अन्य पुस्तकें भी लिखीं।

राजाजी एक काव्यात्मक व्यक्तित्व के स्वामी थे। कई मौकों पर उनकी कुछ कविताओं को संगीत में भी परिवर्तित कर दर्शकों को प्रस्तुत किया गया है। कर्नाटक संगीत की सबसे सफल गायिक सुश्री सुब्बालक्ष्मी ने कई महत्त्वपूर्ण अवसरों पर उनकी कविताओं को गाया है। उन्होंने अद्र्ध कर्नाटक संगीत के रूप में उनके प्रसिद्ध गीता 'कुराई ओणाराम इलाई' को संयुक्त राष्ट्र महासभा में प्रस्तुत किया। उन्होंने 1966 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में

राजाजी के संगीत संबंधी कार्य यहाँ एक छत के नीचे' को भी अपनी आवाज दी।

स्वामी विवेकानंद के साथ बैठक

लोग राजाजी को आध्यात्मिकता और धर्म के मूल विचारक के रूप में देखते थे। स्वामी विवेकानंद के साथ उनकी महाविद्यालय की जिंदगी पर बहस आज भी अच्छी तरह से जानी जाती है। ऐसा कहा जाता है कि जब स्वामी विवेकानंद ने उस छात्रावास का दौरा किया, जिसमें राजाजी रहे, उन्होंने राजाजी से पूछा, "भगवान विष्णु को सभी चिह्नों में नीली आभा में क्यों देखा जाता है?"

राजाजी ने शांतिपूर्ण और ईमानदारी से तत्परतापूर्वक जवाब दिया, "उनका स्वरूप अनंत आसमान और असीम महासागर का प्रदर्शन करता है, इसलिए।" स्वामी विवेकानंद इस उत्तर से बहुत प्रभावित हुए।

राजाजी का राजनीतिक व्यक्तित्व उनके पूरे व्यवसाय में संतुलित रहा। उन्होंने गहराई से हर पहलू का विश्लेषण और मूल्यांकन किया।

राजाजी कांग्रेस के एक सक्रिय स्वयंसेवक बने रहे। गांधीजी और जवाहरलाल नेहरू ने उनके गुणों के लिए उनका सम्मान किया, फिर भी उन्हें अपने राजनीतिक जीवन के दौरान कांग्रेस का अध्यक्ष बनने का अवसर नहीं मिला। बेशक, वह प्रभारी अध्यक्ष के रूप में प्रभारी अध्यक्ष बने थे, जब डॉ. सैफुद्दीन किचलेव को गिरफ्तार किया गया था।

महत्त्वपूर्ण स्थान

राजाजी ने राष्ट्रीय राजनीति में एक महत्त्वपूर्ण जगह पर कब्जा कर लिया। सन् 1962 में गांधी शांति प्रतिष्ठान ने अपने परमाणु विरोधी प्रतिनिधिमंडल को विदेश भेजा, राजाजी को इसका हिस्सा होने का सम्मान दिया गया।

राजाजी ने 28 दिसंबर, 1972 को अपनी आखिरी साँस ली। नेहरूजी के विचार में, 'राजाजी एक सम्मानजनक व्यक्तित्व थे। उन्होंने अपनी आत्मकथा में उन्हें इन शब्दों में वर्णित किया है-''राजाजी एक बुद्धिमान, तेज, निस्संदेह स्वार्थरहित व्यक्ति हैं, जो विश्लेषण की गहन अंतरदृष्टि रखते हैं।

❑❑❑